माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

द्वारा संचालित पाठ्यक्रम का कक्षा शिक्षण हेतु विभाजन

शैक्षिक सत्र – 2017–18

कार्यालय जिला विद्यालय निरीक्षक, कानपुर नगर

मोबाइल नं0 :– 9454457385
वेबसाइट :– www.dioskanpurnagar.org
ई–मेल आई0डी0 :– diosknpngr@gmail.com

प्राक्कथन

किसी देश की प्रगति, उन्नति व विकास का मूलाधार उस देश की शिक्षा व्यवस्था होती है। शिक्षा का उद्देश्य उस देश के नागरिकों का सर्वांगीण विकास करना है। प्राचीनकाल में ही हमारे देश के ऋषियों, मुनियों ने विद्या के महत्व को समझते हुये लिखा हैः–

विद्या विहीन : पशुभि : समान : ।

यही कारण है कि आदिकाल से मनुष्य औपचारिक, अनौपचारिक तथा आनुषंगिक रूप से विद्यार्जन करता रहा है। औपचारिक शिक्षा में शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में शैक्षिक प्रशासन की महती भूमिका है। शिक्षण कार्य से बालक/बालिकाओं का शारिरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास होता है। इसके लिये शिक्षण–अधिगम व मूल्यांकन की रणनीति बनानी होती है। इस कार्य में वास्तविक सफलता तभी प्राप्त होगी, जब इस प्रक्रिया से जुड़े सभी तत्वों का संतुलित योगदान होगा।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शैक्षिक नियोजन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विद्यालयों में इसे पर्याप्त महत्व न देते हुये गतिविधियाँ संचालित होती हैं, जिसके अच्छे परिणाम नहीं आते। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुये हर स्तर पर शैक्षिक–पंचांग को अत्यन्त महत्व प्रदान किया जा रहा है। इस शैक्षिक–पंचांग का एक महत्वपूर्ण भाग सभी कक्षाओं के पाठ्यक्रम को निर्धारित समय से पूर्ण कराना है, अतः उक्त पाठ्यक्रम को विद्वान शिक्षकों से समयबद्ध विभाजित कराया गया है, जिससे शिक्षण कार्य को सम्पन्न कराकर विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्नयन की व्यवस्था की जा सके।

शैक्षिक संस्थाओं में परीक्षा परिणाम बहुत महत्व रखता है, इसका सीधा सम्बन्ध अध्यापक की अध्यापन कला व उसके कार्य की गुणवत्ता से है। अध्ययन द्विपक्षीय प्रक्रिया है। अधिगम, उसका लक्ष्य व ध्येय है। बिना अधिगम के अध्यापन का कोई औचित्य नहीं है। प्रभावी शिक्षण और त्रुटियों के विश्लेषण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कक्षा शिक्षण को सजीव, उद्देश्य पूरक, रूचिकर, प्रेरक एवं उत्साहपूर्ण बनाने से शिक्षा में गुणवत्ता लायी जा सकती है।

किसी तथ्य या अवधारणा को विद्यार्थियों ने कितना सीखा है? उसकी जानकारी मूल्यांकन के द्वारा होती है। यह शिक्षा प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। विभिन्न प्रकार से कार्य को जाँचने या परखने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है। अनुभव व व्यवहार में क्या सुधार या परिवर्तन हुआ, मूल्यांकन द्वारा ही जाना जा सकता है। किसी विद्यार्थी की जीवन में सफलता या असफलता उससे सम्बन्धित सभी संस्थाओं व समग्र समाज की सफलता या असफलता है।

यह पाठ्यक्रम विभाजन आपको प्रस्तुत करते हुये हम अपार हर्ष का अनुभव कर रहे हैं, हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पाठ्यक्रम विभाजन सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को समयबद्ध तरीके से पूर्ण करने में सभी अध्यापकों/अध्यापिकाओं का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जो कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्नयन हेतु एक प्रभावी सोपान होगा। अन्त में हम यह कहना चाहेंगे कि कक्षा 06 से 12 तक के सभी विषयों का पाठ्यक्रम विभाजन किया गया है, यदि कतिपय विषयों का पाठ्यक्रम विभाजन नहीं है तो विद्यालय के प्रधानाचार्य सम्बन्धित विषय के अध्यापकों से पाठ्यक्रम विभाजन कराकर अध्यापन कार्य कराने में सहयोग प्रदान करेंगे। पाठ्यक्रम विभाजन में सहयोग देने वाले सभी सुधीजनों का हम आभार व्यक्त करते हैं।

समस्त प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या/शिक्षक/शिक्षिकाओं को नव शैक्षिक सत्र की हार्दिक शुभकामनायें।

अन्त में मण्डलीय संयुक्त शिक्षा निदेशक, कानपुर मण्डल, कानपुर, **श्री राजेन्द्र प्रसाद जी** के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, जिनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन में यह पाठ्यक्रम विभाजन पूर्ण किया गया।

(एस0एन0 चौरसिया)
जिला विद्यालय निरीक्षक (द्वितीय),
कानपुर नगर।

डॉ0 (विनय मोहन वन)
जिला विद्यालय निरीक्षक,
कानपुर नगर।

प्रधानाचार्यों/शिक्षकों से अपेक्षायें

- ❖ विद्यालय के प्रारम्भ होने, प्रार्थना सभा करने, प्रार्थना सभा में नियमित रूप से नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत प्रत्येक दिन एक शिक्षक एवं एक छात्र/छात्रा से एक–एक आदर्श वाक्य बताने का समय निर्धारित किया जाये।
- ❖ विद्यालयों के शिक्षकों एवं छात्रों की शैक्षिक वातावरण सृजन समिति, पाठ्यक्रम शिक्षण निगरानी समिति, शिक्षणेत्तर कार्यक्रम निगरानी समिति, अनुशासन समिति, परीक्षा समिति व वृक्षारोपण समिति, प्रवेश समिति आदि का गठन किया जाये।
- ❖ विद्यालय में व्यायाम शिक्षा, खेल–कूद, वाद–विवाद प्रतियोगिता आदि के लिये भी समय सारणी में कालांश निर्धारित किये जाये।
- ❖ कमजोर छात्रों के उपचारात्मक शिक्षण हेतु अतिरिक्त समय दिया जाये तथा मेधावी छात्रों पर विशेष ध्यान दिया जाये, उनके अनुरूप पाठ्य सामग्री उपलब्ध करायी जाये। प्रत्येक पाठ हेतु यथा आवश्यक/अपेक्षित गृह कार्य देने एवं उसे अवलोकित करने का कार्य अध्यापन में सम्मिलित किया जाये।
- ❖ विभाग द्वारा निर्गत संकलन शैक्षिक पंचांग 2017–18 का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाये।
- ❖ पाठ्यक्रम के शिक्षण हेतु निर्धारित कार्यक्रम को दृष्टिगत रखते हुये ही विद्यालय की समय सारणी बनायी जाये और कालांश का निर्धारण किया जाये।
- ❖ मासिक, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक, गृहपरीक्षायें निर्धारित अवधि में ही करायी जाये।
- ❖ राष्ट्रीय/अन्तराष्ट्रीय दिवसों पर विद्यालय में कार्यक्रम आयोजित किये जाये।
- ❖ विशेष वृक्षारोपण अभियान के अन्तर्गत दिनांक 05.07.2017 को महोत्सव मनाते हुये वृक्षारोण कराया जाये।
- ❖ बालिकाओं को आत्मरक्षा के लिये सप्ताह के प्रत्येक कार्य दिवस के अंतिम वादन में एक–एक कक्षा को चक्रानुसार मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण दिलाया जाये।
- ❖ पाठ्यक्रम शिक्षण हेतु निर्धारित कार्यक्रम की छायाप्रति सम्बन्धित विषय अध्यापक को प्राप्त करा कर कार्यक्रम का अक्षरशः पालन कराया जाये तथा छात्रों को भी अवगत करायें।
- ❖ शिक्षकों को डायरी उपलब्ध कराकर उसे विधिवत भरवाया जाये।
- ❖ प्रधानाचार्य प्रत्येक सप्ताह शैक्षिक पंचांग एवं निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार शिक्षण की अध्यापकवार एवं विषयवार समीक्षा करेंगे तथा उसकी प्रगति रिपोर्ट निर्धारित प्रारूप पर कार्यालय को भेजेंगे।
- ❖ शिक्षक किसी प्रकरण में शिक्षण कार्य करने में TLM का प्रयोग करें, जिससे छात्रों में अधिगम हो सके।
- ❖ यथा सम्भव किसी संबोध को स्पष्ट करने में वैकल्पिक विधियों का भी प्रयोग करें।
- ❖ छात्रों से मित्रवत् व्यवहार रखें एवं उनकी समस्याओं का विधिवत निदान करें।
- ❖ प्रयोगशालायें एवं पुस्तकालय नियमित समय से खुलें और उनका सदुपयोग हो।

–:★★:–